1

प्रथम वैज्ञानिक सुंदरकांड

भारतीय दर्शनशास्त्र, पुराण, वेद, उपनिषद, आदि सभी धार्मिक ग्रंथों का सार तत्व है। 'रामचरितमानस' जो कि आज पूरे विश्व में स्वीकार्य ग्रंथ है। इस महान ग्रंथ का सार तत्व है 'सुंदर कांड'। 'सुंदर कांड' इसलिए सभी लोग पसंद करते हैं क्योंकि ऐसी मान्यता है कि सुंदर कांड का पाठ करने वाले को मंजिल जल्दी मिल जाती है उनका उद्देश्य पूरा हो जाता है क्यों क्योंकि सुंदर कांड में जितने भी चरित्र हैं उन सबको अपनी-अपनी अभीष्ट मंजिल हनुमान जी की कृपा से मिल गई है या मिल जाती है। आप भी अपनी मंजिल तक पहुंचने के लिए, लक्ष्य प्राप्त करने के लिए शुद्ध मनोयोग से सुंदर कांड का पाठ करके और अभीष्ट लक्ष्य तक पहुंचने में सफलता प्राप्त कर सकते हैं ।

आप स्वयं देखिए सुंदर कांड का प्रारंभ होता है और हनुमान जी श्री राम के बाण की भांति अपने लक्ष्य की ओर हर्षित मन से अग्रसर होते हैं ।

जिमि अमोघ रघुपति कर बाना,
एही भांति चलेउ हनुमाना।

परिणाम तुरंत मिलता है, हनुमान जी अगम्य सागर को पार कर लेते हैं

वारिधि पारगयउ मतिधीरा । ।

दूसरा लक्ष्य है,

हनुमान जी का सीता माता तक पहुंचना ।

इस लक्ष्य को भी हनुमान जी बड़ी आसानी से प्राप्त कर लेते हैं

देखि मनहि मह कीन्ह प्रनामा

फिर हनुमान जी को भूख लगती है, फल खाने की इच्छा होती है। यह उद्देश्य भी पूरा होता है और हनुमान जी फल खा लेते हैं।

रघुपति चरन हृदय धरि तात मधुर फल खाहु । ।

तीसरा कार्य है हनुमान जी का विभीषण को ये समझाना कि वह पाप की नगरी से निकलकर राम की ओर आ जाए इसमें भी सफलता मिलती है, विभीषण राम की शरण आते हैं और राम उन्हें अपना लेते हैं ।

दीन बचन सुनि प्रभु मन भावा
भुज बिसाल गहि हृदय लगावा

इसी प्रकार जब लक्ष्मण जी कहते हैं सागर पार करने के लिए, सागर से कादर की भांति विनती ना की जाए । राम जी पहले लक्ष्मण जी को समझाते हैं लेकिन बाद में लक्ष्मण की इच्छा को

पूरा करते हुए अपने धनुष से सागर को सूखने का उपक्रम भी करने लगते हैं ।

लछमन बान सरासन आनू,
सोखौं वारिध विसिख कृसानू । ।

लक्ष्मण जी को भी अपनी मंजिल मिल गई । समुद्र चाहता है कि उसके उत्तर में रहने वाले दुष्टों का नाश हो, राम जी अपने बाण से उन दुष्टों का संहार करके सागर की इच्छा पूरी कर देते हैं।

सुनि कृपाल सागर मन पीरा,
तुरतहि हरी राम रनधीरा । ।

और भी जिसने जो भी इच्छा की, सुंदर कांड में वह सब पूरी हुई चाहे वह सात्विक इच्छा हो अथवा असुरी, सबकी इच्छा पूर्ति सुंदरकांड में होती हैं ।

जय जय सियाराम

2

वैज्ञानिक सुंदरकांड

जिमि अमोघ रघुपति कर बाना ।

हनुमान जी सागर लांघ गए, कुछ आश्चर्य नहीं।

जलधि लांघि गये अचरज नाही।

नहीं यह सही नहीं है। यह तो सबसे बड़ा आश्चर्य है कि हनुमान जी सौ योजन के सागर को कैसे पार कर गये। उनके लिए तो कोई भी कार्य बड़ा नहीं है जो वे कर न सके।

कवन सो काज कठिन जग माही जो नहिं होय तात तुम पाही ।

हनुमान जी के द्वारा सागर का लांघना कोई आश्चर्यजनक नहीं है ऐसा हनुमान जी की शक्तियों को देखते हुए यह संभव है और आश्चर्यजनक नहीं है।

किंतु रामचरितमानस के सुंदर कांड में वर्णित इस प्रसंग को देखने से यह महान आश्चर्य लगता है। क्योंकि हनुमान जी बिना किसी प्रयास के बिना किसी उद्यम के पार करने की बिना किसी प्रक्रिया के इतना विशाल सागर कैसे पार हो गए । हाँ सही है हनुमान जी ने स्वयं ऐसा कोई शारीरिक श्रम वाला प्रयास नहीं किया जो उन्हें सौ योजन पर्यंत लंबे सागर को पार करा सके यह तो बहुत आश्चर्यजनक है । क्योंकि हनुमान जी ने सागर लांघने के लिए स्वयं कोई उद्यम नहीं किया। ऐसा गोस्वामी तुलसीदास जी ने लिखा है । उन्होंने लिखा है कि -

जिमि अमोघ रघुपति कर बाना ।
एही भांति चलेउ हनुमाना।

जैसे रघुनाथ जी का बाण चलता है उसी प्रकार हनुमान जी सागर पार करने के लिए आगे बढ़े। अब बताइये बाण किसलिए उद्यम करता है लक्ष्य भेदने के लिए या आगे बढ़ने के लिए? वह तो धनुष के सहारे और धनुष का प्रयोग करने वाले व्यक्ति की शक्ति के सहारे आगे बढ़कर लक्ष्य भेदन करता है जिधर उसे लक्षित किया जाएगा उधर ही वो जायेगा। हनुमान जी राम के बाण की तरह अमोघ बाण की तरह अपने लक्ष्य की ओर जा रहे हैं। और हनुमान जी ने सागर पार करने का कोई प्रयास किया नहीं तो फिर कैसे हुए सागर पार। आप रामचरितमानस के सुंदर कांड के इस प्रसंग को पुन: देखिए । देखिए हनुमान जी ने क्या-क्या कार्य किए ।आप देखेंगे आप पाएंगे कि हनुमान जी ने सबसे पहले सब को प्रणाम किया सबको आशा बधाई कि आप सब कष्ट सह कर भी यहीं रुकिए मेरा इंतजार करिए मैं शीघ्र कार्य संपन्न कर लूंगा। देखिए उनके कार्य-

यह कहि नाइ सबन्हि कंह माथा।

चले हरषि हिय धरि रघुनाथा ।।

और इसके पश्चात हनुमान जी ने एक सुंदर पर्वत को ढूंढ लिया।

सिंधु तीर एक भूधर सुंदर।

सुंदर पर्वत पर हनुमान जी ने क्या किया?

कौतुक कूदि चढ़ेउ ता ऊपर।

उस पर्वत पर हनुमान जी खेल-खेल में कूदकर चढ़ गए। यही सब हनुमान जी के कार्य हैं। इसके बाद हनुमान जी ने बार-बार रघुनाथ जी को याद किया, फिर बड़े बलशाली हनुमान जी बड़े वेग से उछले और उस पर्वत पर अपने पैर से जोर से आघात दिया ।

जेहि गिरि चरन देइहनुमंता ।

हनुमान जी ने उस पर्वत पर अपने चरणों से प्रहार किया। यहां तक सब कार्य हनुमान जी ने किये हैं ।इसके बाद हनुमान जी के द्वारा कोई कार्य करने का कोई उल्लेख रामचरितमानस में इस प्रसंग में नहीं है। इसके बाद सीधे गोस्वामी तुलसी दास जी ने लिखा-

जिमिअमोघ रघुपति कर बाना ।
एहि भांति चलेउ हनुमाना ।।

सारी क्रियाकलापों का उल्लेख तुलसी दास ने किया है, चले हर्षित हुए रघुनाथ को हृदय में रखा प्रणाम किया कूदे प उछले यह सब किया। उन्होंने इसके बाद ऐसा क्या हुआ कि हनुमान जी राम जी की बाण की भांति अपने लक्ष्य की ओर आगे बढ़ चले। सागर पार करना है कोई साधन वायुयान या जलयान है नहीं, फिर पार करने के लिये या तो दौड़ कर छलांग लगाना होगा समुद्र में, या फिर आकाश की ओर उछाल मारनी होगी लेकिन हनुमान जी ने ऐसा कुछ नहीं किया। यह तुलसी दास जी की चौपाई में नहीं है इससे सिद्ध होता है कि अब हनुमान जी नहीं बल्कि राम जी की क्रिया हो रही है। इसलिए,

जिमि अमोघ रघुपति कर बाना।
एही भांति चलेउ हनुमाना।।

नहीं ऐसा नहीं है इसके बाद भी हनुमान जी ने स्वयं प्रयास करके सागर पार करने की कोशिश की है। अभी तक हनुमान जी दूसरे रूप में थे अब इसके बाद हनुमान जी ने अपना रूप बदला है और नए रूप में नए हनुमान जी ने अपनी कोशिश से सागर पार किया है। आप देखिये हनुमान जी के बारे में जामवंत जी ने कहा था कि आप तो बुद्धि, विवेक तथा विज्ञान के निधान हैं,

पवन तनय बल पवन समाना।
बुधि विवेक विज्ञान निधाना।।

अभी तक बलवान, बुद्धिमान और विवेकशील हनुमान जी अपना कार्य कर रहे थे, अब इसके बाद विज्ञान के निधान हनुमान जी ने कार्य करना प्रारंभ किया। उन्होंने समुद्र के तट पर तमाम

पर्वत के टुकड़ों तथा चट्टानों में से एक सुंदर पर्वत को छांटा है और इसकी विशेषता है कि यह रबड़ स्प्रिंग की भांति संकुचित हो सकता है और फिर स्प्रिंग की भांति अपनी मूल अवस्था को लौट सकता है। ऐसा बिना किसी आधार के नहीं कहा जा रहा है तुलसी दास जी ने लिखा है,

सिंधु तीर एक भूधर सुंदर।

अब बताइए चट्टानों पर पर्वतों के टुकड़ों में क्या कोई सुंदर भी होता है, लेकिन हनुमान जी ने सुंदर को छांटा है उसकी सुंदरता यही है कि वह विशेष पत्थर है जो कि पूरी तरह से स्प्रिंग की तरह संकुचित हो सकता है ।अब इस विशेष पर्वत पर हनुमान जी गणना कर रहे हैं कि कितने फोर्स से आघात किया जाए कि सौ योजन सागर के लिये प्रक्षेपण की गति मिल सके। जी हाँ, मिसाइल की तरह । इसीलिए तुलसी दास जी ने लिखा है,

बार बार रघुबीर संभारी ।

इसका तात्पर्य है कि हनुमान जी ने बार-बार राम का स्मरण किया। तब वें गणना करने में सफल हो गए और उनको वह फोर्स ज्ञात हो गया जिससे पर्वत के टुकड़े पर आघात करके प्रक्षेपण की विशेष गति प्राप्त हो जाएगी, जिससे सागर पार होने का लक्ष्य प्राप्त हो जाएगा। अब हनुमान जी ने उसी फोर्स से उस पर्वत पर आघात किया और तुलसी दास जी ने लिखा,

तरकेऊ पवन तनय बलभारी ।

उतने ही आवश्यक बल से पवन पुत्र हनुमान जी ने अपने पैरों से आघात पहुंचाया जिसका परिणाम हुआ कि वह पत्थर, चट्टान, पर्वत संकुचित होते-होते पाताल तक चला गया और फिर वापस अपनी अवस्था को लौटा। लौटते समय उस पत्थर ने स्प्रिंग की भांति हनुमान जी को अभीष्ट दिशा की ओर प्रक्षेपित कर दिया और तुलसी दास जी ने लिखा,

जिमि अमोघ रघुपति कर बाना ।
एही भांति चलेऊ हनुमाना । ।

राम जी के अमोघ बाण की तरह हनुमान जी अपने लक्ष्य की ओर चल पड़े। यह है हनुमान जी की वैज्ञानिक प्रतिभा का कमाल और गोस्वामी तुलसी दास जी का विशिष्ट शब्द विन्यास ।

जय सियाराम।
जय जय सियाराम ।।